# स्कूल और समुदाय में गालियों का इस्तेमाल और हिंसा की शुरुआत

सीमा देशमुख

हम सभी जानते और मानते हैं कि गालियों का प्रयोग नहीं होना चाहिए, लेकिन तब भी न तो हम ख़ुद को रोक पाते हैं और न ही गाली का प्रयोग करने वाले को। सबकुछ देखते हुए भी यह कहने की हिम्मत नहीं कर पाते कि यह ग़लत है, और यह भी एक तरह की हिंसा है। लेख मध्य प्रदेश के कुछ विद्यालयों के बच्चों और किशोरों के साथ गालियों के बारे में की गई बातचीत का विवरण प्रस्तुत करते हुए दर्शाता है कि बच्चों के साथ ऐसे मुद्दों पर बातचीत करना सम्भव है, और यह बातचीत होनी भी चाहिए। लेख बातचीत के बाद बच्चों द्वारा अपने स्कूल / घर में गालियों के प्रयोग को रोकने के लिए किए गए प्रयासों को भी प्रस्तुत करता है। -सं.

समुदाय के अन्दर, समुदाय के बाहर, स्कूल हो या बाज़ार, घर हो या आम रास्ता, लड़ाई-झगड़ों में ही नहीं, बल्कि दोस्तियों में भी गालियों का प्रयोग अकसर सुनाई पड़ता है। गालियाँ हमारी सामान्य बोलचाल में इस कदर शामिल हो गई हैं कि इन्हें कहने और सुनने में अकसर हममें से अधिकांश को हैरानी या ख़राबी महसूस नहीं होती। यदि कोई सवाल उठाए तो जवाब आते हैं कि 'इक्का-दुक्का ही देता हूँ', 'मैंने तो प्यार से बोला' या 'ये इतनी बड़ी बात तो नहीं है'। असल में, हमें गालियों पर अटपटाहट ही नहीं होती या यह कह सकते हैं कि सुनते-बोलते हममें से अधिकांश इसके आदी हो गए हैं।

शिक्षक भी अकसर इस समस्या से जूझते हैं। गालियों को लेकर दण्ड के सिवाय हम शिक्षकों के पास कोई त्वरित उपाय नहीं दिखता। एक तो, यह विचार ही नहीं किया जाता कि इनपर बातचीत हो सकती है। दूसरा, यदि कोई यह सोचता भी है तो इनपर चर्चा करना और समझ बनाना लम्बा और मुश्किल काम जान पड़ता है, लेकिन यह बेहद ज़रूरी भी है। इसलिए हमने तय किया कि इस मुद्दे को बच्चों और युवाओं के बीच ले जाकर समझा जाए कि वे इसे किस तरह से देखते हैं, क्या ये व्यवहार उन्हें भी परेशान करता है, क्या इसको बदलने की ज़रूरत लगती है, और यदि उन्हें बदलने की ज़रूरत लगती है, तो वे बदलाव में सहभागी कैसे हो सकते हैं?

हम बाल संरक्षण से जुड़े कई मुद्दों, जैसे बच्चों के साथ होने वाली शारीरिक व मानसिक हिंसा, यौनिक हिंसा, नशे से रोकथाम, बच्चों की भागीदारी, मानसिक स्वास्थ्य, बच्चों से जुड़े क़ानून आदि पर जागरूकता सत्र नियमित रूप से करते रहे हैं। और ऐसे सत्र बाल समूह, युवाओं व शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों के साथ पिछले 6-7 वर्षों से कर ही रहे थे। इसलिए गाली-गलौज को बन्द करने पर सचेतता के साथ-साथ जागरूकता और सकारात्मक बदलाव के उद्देश्य से हमने हाईस्कूल के किशोरों, समुदाय के बाल समूह और अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं से बातचीत की। हमने 4 स्कूलों और 10 बाल समूहों के साथ 'हिंसा और गाली-गलौज' पर केन्द्रित बैठकें और कार्यशालाएँ आयोजित कीं,

और लगभग 500 किशोरों तक हम इस मुद्दे को ले जा पाए। हर समूह में 30 से 40 सदस्य शामिल थे। 3 स्कूलों में लड़के और लड़कियों का मिला-जुला समूह था। एक स्कूल में केवल लड़कियों का समूह था जिसमें सभी लड़कियाँ मुस्लिम समुदाय से थीं। प्रत्येक समूह के साथ 3-4 सत्र इसी विषय पर केन्द्रित थे।

## स्कूलों में बच्चों के साथ बातचीत

### विद्यालय 1

हमने प्रश्न के रूप में सबके सामने यह बात विचार के लिए रखी कि ऐसी कौन-सी

चित्र : हीरा धुर्वे

बातें हैं जिनसे उनको सुरक्षा महसूस होती है। थोड़ा सोचते हुए एक-दो विद्यार्थियों की ओर से जवाब आया कि यहाँ टीचर अच्छे हैं, पढ़ाई बहुत अच्छी होती है, कोई बात हो तो अच्छे-से समझाते हैं, अच्छे-से बात करते हैं और मारते नहीं हैं। बच्चों ने अच्छे-से बात करने और मार-पिटाई न होने को सुरक्षित माहौल जाँचने का महत्त्वपूर्ण इंडिकेटर समझा। हमको यह भी समझना था कि क्या सभी बच्चे ऐसा ही महसूस करते हैं और इसलिए हमने वापस पूछा, "क्या यहाँ बैठे सभी बच्चों को ऐसा ही लगता है?" सभी ने 'हाँ' में ही जवाब दिया।

बच्चों ने कहा कि उनको घर और स्कूल, दोनों जगह सुरक्षित लगता है पर रोड और बाज़ार बच्चों के लिए सुरक्षित नहीं हैं। बच्चों के साथ अलग-अलग तरह की हिंसा होती है जिसमें मार-पिटाई, गाली-गलौज और छेड़ख़ानी शामिल हैं।

इसी बात को पकड़ते हुए चर्चा आगे बढ़ी और उनसे पूछा गया, "आपके हिसाब से हिंसा में कौन-कौन-सी बातें या व्यवहार सामने आते हैं?" एक लड़की की ओर से तुरन्त जवाब आया, "गुण्डागर्दी करना, किसी बात के लिए दबाव बनाना, गाली-गलौज, छेड़छाड़ करना और मार-पिटाई, यह सब हिंसा है।" अब अगला प्रश्न सबके लिए था, "एक मिनट के लिए आँखें बन्द करके सोचो कि हमारे आसपास अपने घर, स्कूल, खेल के मैदान और बाज़ार में इनमें से किस तरह की हिंसा का व्यवहार हम सबसे ज़्यादा देखते हैं?" सबका जवाब इस बार एक ही था, 'गाली-गलौज'। एक लड़के ने कहा, "...पर हमारे स्कूल में कोई गाली नहीं देता क्योंकि हमारे गुरुजी ने गाली देने को मना किया है। हमारे स्कूल में गाली देने पर सज़ा होती है।" फिर सवाल आया, "स्कूल के बाहर या जब गुरुजी आसपास न हों, तब क्या गाली देकर बात होती है?" सबके चेहरों पर शरारत वाली हँसी थी। सामने बैठे एक बच्चे ने आँखें झपकाकर हँसते हुए कहा, "तब तो बहुत चलती है।" और तुरन्त पीछे मुड़कर एक बच्चे की ओर इशारा करते हुए बोला, "सबसे ज़्यादा गालियाँ देने वाला वो बैठा है।" फिर क्या था! सब एक दूसरे को जैसे उजागर कर रहे थे... "मैं नहीं,

वो देता है, मैं तो कभी-कभी देता हूँ, वो तो हर बात में।''... कोई बोला, ''मैं स्कूल में कभी गाली नहीं देता... वो तो बहुत गन्दी गालियाँ देता है।'' एक लड़का ज़ोर से बोला, ''मैडम, ये लड़कियाँ भी बहुत गालियाँ देती हैं, केवल लड़के ही नहीं देते।'' कुछ लड़कियाँ, जो चुपचाप इस बातचीत को सुन रही थीं, बोलीं, ''मैडम, झूठ बोल रहे हैं ये लोग। हम लोग कोई गाली नहीं देते। लड़के तो छोटी-छोटी लड़ाई में भी इतनी गन्दी-गन्दी गालियाँ देते हैं कि सुनने में भी बहुत बुरा लगता है। लड़कियाँ तो केवल 'कुत्ता', 'कमीना' बस इतना ही बोल देती हैं, और वह भी कभी-कभी।'' सब लड़के और लड़कियाँ ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। कुछ लड़कों ने ज़ोर देकर कहा, ''सही तो है, वे लड़कियों वाली गाली ही देती हैं, लड़कों वाली नहीं।'' 'लड़कों वाली गाली' सुनते ही हमारे कान एकदम खड़े हो गए, ''क्या-क्या! लड़कियों और लड़कों वाली गाली! ये अलग-अलग होती हैं क्या?'' एक विद्यार्थी ने बताया, ''हाँ मैम! 'लड़कियों वाली गाली' मतलब ऐसी ही हल्की-फुल्की और जो गाली लड़के देते हैं वो बहुत गन्दी होती हैं।'' ''मतलब?'', मैंने पूछा तो उसने बताया, ''अरे मैम! गन्दी यानी माँ-बहन की। आप नहीं समझोगी... बहुत गन्दी होती हैं।'' फिर पूछा, ''आप लोगों ने कितनी गालियाँ सुनी और बोली हैं?'' तब बच्चों ने धीरे-धीरे 15-20 तरह की गालियाँ बताईं, जो वे अकसर सुनते या बोलते हैं। अब बात इस तरफ़ मुड़ गई कि ये सारी गालियाँ कैसे बनीं और क्यों बोली जाती हैं। उनसे पूछा गया, ''क्या आपने सोचने की कोशिश की कि इनका क्या अर्थ है?'' बातचीत से यह समझ आया कि बहुत-सी गालियाँ, जो हम एक दूसरे के साथ लड़ाई में इस्तेमाल करते हैं, वे सभी महिलाओं के शरीर पर हैं। गुरुजी के आदेश का पालन ज़रूर आधे से ज़्यादा बच्चे स्कूल में करते होंगे, पर वह भी शायद सज़ा के डर से। स्कूल से बाहर निकलते ही माहौल के मुताबिक़ वे गाली देने लगते हैं। इसलिए गाली क्यों नहीं देना है, इसपर सकारात्मक चर्चा की ज़रूरत है।

चर्चा आगे बढ़ी तो यह बात आई कि गाली सुनना किसी को अच्छा नहीं लगता, परन्तु देते समय हम यह क्यों नहीं सोचते? एक बच्चे ने कहा, ''मैम, ग़ुस्से में निकल जाती है पर सच में सुनना तो अच्छा नहीं लगता! कोई माँ-बहन की गाली देता है तो ख़ून खौल जाता है। इतना ग़ुस्सा आता है कि सामने वाले को फोड़ डालो। कई बार इन गालियों के कारण लड़ाई बहुत बढ़ भी जाती है।'' सभी बच्चे बातचीत में बहुत ही गम्भीरता से शामिल हो रहे थे और कुछ-कुछ ख़ुद सोच और बोल रहे थे। घर में माता-पिता के झगड़े में पिता, माँ को किस तरह की गाली देते हैं, पड़ोस में छोटे बच्चे खेल-खेल में 'तेरी माँ की' जैसी गालियाँ देते हैं, या खेल के मैदान में दोस्तों के साथ मस्ती में ही सही, कैसी गालियाँ देते हैं, यह सब वे याद कर पा रहे थे।

चित्र : हीरा धुर्वे

## आदत में बदलाव के सकारात्मक तरीक़े

अब बात इस दिशा में बढ़ी कि स्कूल में इस आदत को कैसे बदलें? बदलाव के लिए कहाँ से शुरुआत करें? क्लास के हेड बॉय ने कहा, "जिसको गाली देते सुनें, उसपर फ़ाइन लगे, तभी रुकेगी।" किसी ने सलाह दी, "जब कोई सामने गाली दे तो क्यों न उसको तुरन्त मना करें!" एक ने कहा, "हम लोग ख़ुद से शुरुआत करें, सब अपनी-अपनी आदत भी बदलें, तभी ठीक होगा।" बात तो सही लगी कि जो लोग इस बात को समझे हैं, कम-से-कम वे ख़ुद से अपनी आदत को बदलें और सामने यदि कोई गालियों का उपयोग करे तो उससे केवल यह बोलें, "गाली देकर बात नहीं करें। यदि वह नहीं माने तो दोबारा कहें। यदि फिर भी न माने तो उसके सामने से चले जाएँ। अगर कोई एक बार में न माने तो हर बार गाली कहने पर मना करें"। सभी को यह बात ठीक लगी। लेकिन केवल स्कूल में ही नहीं, बाहर भी यह तरीक़ा इस्तेमाल करने का विचार सबको बेहतर लगा। स्कूल में पोस्टर के माध्यम से यह सूचना सबको देने की बात हुई। सबने यह तय किया कि अगले दो हफ़्तों तक इसी बात को ध्यान में रखते हुए 'रोको-टोको' की रणनीति पर काम करेंगे, दो हफ़्ते बाद फिर अपने अनुभवों के साथ मिलने पर सहमति बनी।

अन्य स्कूलों में भी इसी प्रक्रिया से सत्र चलाए गए और सकारात्मक बदलाव के लिए बच्चों के साथ कुछ ऐसी टास्क-आधारित गतिविधियाँ सोची गईं जो अपने-अपने स्तर पर स्कूल और समुदायों में करनी थीं। इन सत्रों के दौरान हमें यह समझ आया कि बच्चों की बातचीत में गाली की आदत अपने घर और आसपास के माहौल से पनपी है। सत्रों के दौरान बच्चों ने यह बात भी साझा की कि घर में माता-पिता के झगड़े होते हैं तो पिता, माँ को उसकी 'माँ की गाली' देकर मारता है।

### विद्यालय 2

इस स्कूल में गाली-गलौज और हिंसा पर बातचीत के दौरान लड़कियों ने बताया, "रोड पर बहुत डर लगता है, गाली तो हर क़दम पर सुनने को मिलती है। बुरा लगता है, पर तब

चित्र : हीरा धुर्वे

नज़रअन्दाज़ करके आगे बढ़ जाते हैं। कभी रोकने का सोचा नहीं। सड़क और बाज़ार में ये छेड़ख़ानी वाला व्यवहार और गाली-गलौज तो आम बात है। अभी इसपर बात करते हुए हम उन शब्दों पर सोच भी रहे हैं। इसके पहले भी हमने कई बार ये शब्द गालियों में सुने। घर में भी इस तरह की बहुत गालियाँ देते हैं, पर किसी ने यह नहीं कहा कि गाली मत बोलो, किसी ने इसके लिए नहीं टोका। स्कूल में टीचर के सामने तो गाली नहीं बोलते, पर जब लड़ाई हो जाती है तो यह निकल ही जाती है क्योंकि

इसकी आदत ज़्यादा है।'' कुछ बच्चियों ने कहा, ''इसका विरोध करना ज़रूरी है, चाहे घर हो या स्कूल। जो भी लोग गाली देते दिखें बस उनको रोको! यही एक तरीक़ा है जिससे शायद गालियाँ कम हों।'' पीछे बैठी एक लड़की ने इसमें जोड़ा, ''यदि नहीं माना तो भी क्या, पर उनको ये तो पता चलेगा कि हमको यह तरीक़ा या ये बातें अच्छी नहीं लगतीं। कम-से-कम जब वह हमको देखेगा तो उसको हमारा टोकना याद आएगा।''

### विद्यालय 3

इस स्कूल में ज़्यादातर मुस्लिम समुदाय की लड़कियाँ पढ़ाई करती हैं। यहाँ भी हिंसा और गाली-गलौज पर हुई चर्चा में उन्होंने बताया कि बात-बात पर गाली देना आदत का मसला है। घर या आसपास के इलाक़े में गालियों का इस्तेमाल नहीं होता, पर जब हम लोकल बस या टेम्पो में सफ़र करते हैं तो वही लोग छोटी-छोटी बात की शुरुआत भी गालियों से करते हैं। जैसे– 'अबे साले, पीछे हो', 'पीछे खसक बहन...', आदि। वे किसी को नहीं छोड़ते, छोटे-छोटे बच्चों के साथ भी गाली-गलौज के साथ बात करते हैं जबकि उनकी उनसे कोई लड़ाई नहीं होती है। यूँ ही सीधी-सी बात कहने में भी गाली का इस्तेमाल करते हैं। बस स्टैंड, लोकल बस, होटल, ढाबे या पान की गुमटी पर ऐसी बातें सुनने में आती हैं। बहुत बार हमारी काम की जगह भी हमारे शब्दों और बोलचाल के तरीक़े पर बहुत असर डालती है।

### विद्यालय 4

इस स्कूल में तीन कक्षाओं के बच्चे मिले-जुले 2 समूहों में थे और इनके साथ बातचीत के 6 सत्र हुए। जब गाली-गलौज पर सत्र चला तो पूरी कक्षा में फुसफुसाहट और हँसी थी। सबके मन में यह सवाल चल रहा था कि इसपर क्या बात करेंगे और क्यों? कक्षा के सभी बच्चों से मेरी एक पहचान और आत्मीयता थी। मेरा पहला सवाल था, ''हम सबने कितनी प्रकार की गालियाँ सुनी हैं और क्या किसी के साथ दोस्ती या प्यार में गाली देकर बात करते हैं?'' मुझे दोनों प्रश्नों के जवाब में चुप्पी मिली। थोड़ा इन्तज़ार करने के बाद एक बच्चा खड़ा हुआ और बोला, ''मैडम, गाली तो बहुत सारी सुनी हैं पर जब लड़ाई होती है तो शुरुआत में हल्की-फुल्की गाली और यदि बात बढ़ जाए तो माँ और बहन से कम तो कुछ नहीं होता!'' ''कैसा लगता है गाली देकर?'', मैंने पूछा, तो जवाब था, ''कैसा-क्या लगेगा, रोज़ ही सुनते हैं या सुनाते हैं।''

चित्र : हीरा धुर्वे

''घर में गाली का इस्तेमाल होता है?'', का तुरन्त जवाब आया, ''हाँ मैडम!'' कुछ बच्चे बोले, ''हमारे घर में गाली नहीं देते, पर बाहर तो रोज़ सुनते हैं। हमारी बस्ती में 4 साल का बच्चा भी जब ग़ुस्सा होता है तो गाली देता है। बच्चे को भी मालूम है कि गाली कब देनी है, भले ही वह उसके बारे में कुछ नहीं जानता।'' 11वीं की एक लड़की बोली, ''जब लोग शराब पीते हैं तो ज़्यादा गाली देते हैं, वैसे नहीं देते।''

तुरन्त 2-3 बच्चों ने इसपर कहा, "अभी यहीं कितने लोग हैं जो बहुत गालियाँ देते हैं। मैडम, पीने-वीने से कुछ नहीं होता! बचपने से सुनते-सुनते अपनी भी आदत पड़ जाती है, शराब का इससे कोई लेना-देना नहीं है। एक बात और है कि लड़कियों के साथ झगड़ा होता है तो गाली नहीं देते, पर लड़कों के बीच लड़ाई हो तो गाली चलती है।" "कैसी गाली चलती है?", का जवाब था, "बहुत गन्दी-गन्दी, माँ-बहन की।"

अनुभव साझा करते हुए एक बच्चे ने बताया कि जब उसने एक बच्चे को टोका तो जवाब आया, "अबे! बड़ा दूध का धुला है, मुझे मत सिखा। पहले ख़ुद सीख जा, फिर बात करना।" तो उसने अपने दोस्त को जो जवाब दिया वह मज़ेदार और सीखने वाला था। उसने कहा, "देख भाई! कोई दूध का धुला नहीं है और यदि बनना चाहे तो तू मेरी मदद कर, मैं तेरी...। इसमें बुरा क्या है, अगर कोई कुछ अच्छा करना चाहे तो!" तब दोस्त ने कहा, "ऐसा बोल न कि तू मेरी मदद कर रहा है ताकि तू गाली देना छोड़ दे।" बच्चों ने साझा किया कि सच में जब से गाली को बातचीत के ग़लत तरीक़े के रूप में समझे हैं, तब से जब गाली सुनते हैं, तब कुछ ख़राब लगता है।

## बदलाव के लिए किए गए प्रयास

इन सभी कार्यशालाओं में गाली-गलौज को समझने की कोशिश तो की गई परन्तु इसके हिंसात्मक रूप को पहचानने और इसकी मुख़ालफ़त करने के लिए अपने स्तर पर सक्रिय होकर सचेतता के साथ इसका विरोध करने की तैयारी भी हुई। इसपर सभी के बीच राय तो पहले ही बन चुकी थी, मसलन :

- **ख़ुद के व्यवहार पर सचेतता :** हम ख़ुद गाली सूचक शब्दों का उपयोग नहीं करेंगे।
- **सकारात्मक माहौल बनाना :** जो गाली का उपयोग करेगा, उसको टोकेंगे, और बार-बार टोकेंगे।

कुछ काम ख़ुद के लिए तय किए, जिनमें स्कूल और बस्ती में चार्ट शीट पर सन्देश लिखने और हमारे सामने जो भी गालियों का प्रयोग करें, उनको टोकने की हिम्मत जुटाने की बातें शामिल थीं। इस बात से फ़र्क़ नहीं पड़ना चाहिए कि सामने वाला हमारी बात मानेगा या नहीं। कहीं भी ग़लत दिखाई या सुनाई पड़ रहा है तो नियमित टोकते रहने की बात सोची गई।

## असर जो देखने को मिले

1. बच्चों ने बताया कि उन्होंने मिलकर पोस्टर बनाए। इन पोस्टरों में गालियाँ न देने का सन्देश लिखकर उन्हें जगह-जगह चिपकाया गया। बच्चों ने बताया कि हम 4-5 लोगों ने इसकी ज़िम्मेदारी ली और 11वीं व 12वीं के बच्चों के साथ स्लोगन लिखे। स्लोगन लिखने में बाल कैबिनेट के प्रतिनिधियों और 2-3 शिक्षकों ने मदद की और सुझाव दिए कि इन्हें कहाँ चिपकाना बेहतर होगा। जब इन्हें चिपकाया गया तो छोटे बच्चे झुण्ड बनाकर देख रहे थे। कई दिनों तक पोस्टर अपनी जगह पर चिपके रहे और बच्चे उनको पढ़ते रहे। बाल कैबिनेट के सदस्यों की असेम्बली में बच्चों को गाली देकर बात न करने और इस तरह के व्यवहार को रोकने के लिए 'रोक-टोक अभियान' चलाने पर सभी ने सहमति दी।

2. कक्षा 11 के एक बच्चे ने साझा किया, "हम लोग शाम को ग्राउंड पर जाकर क्रिकेट खेलते हैं। मेरा एक दोस्त, जो पास के मोहल्ले में रहता है, वह भी मेरे साथ रोज़ खेलने आता है। उसको गाली देने की आदत है। जब वह कल खेलने आया तो रोज़ की तरह गाली देकर कह रहा था, 'अबे तेरी माँ का... बॉल तो छोड़ दी।' वह तीसरी बार गाली दे रहा था। मुझे बहुत ग़ुस्सा आ रहा था पर थोड़ी शान्ति के साथ मैंने उसे गाली देने के लिए मना किया, 'तुम गाली नहीं दोगे।' उसने कहा, 'मैं तो दूँगा, तुमको खेलना हो तो खेलो। तुमको तो नहीं दी।' उसके बाद हम खेलते रहे। उसके मुँह से वापस गाली निकली। तब मैंने खेल को बीच में

चित्र : हीरा धुर्वे

रोकते हुए अपने दोस्त को कहा, 'तुमको गाली देने को मना किया है, गाली क्यों दे रहे हो?' उसने कहा, 'मुझे नहीं खेलना।' बाक़ी दोस्त भी उसे बोल रहे थे, 'सही बात है तुम गाली क्यों दे रहे हो?' इसके बाद वह चला गया। दो दिन खेलने नहीं आया और न ही मिलने पर बात की। तीसरे दिन वह खेलने आया। हमने भी उसे कुछ नहीं कहा। खेलते-खेलते वापस बात शुरू हुई, पर उस दिन उसके मुँह से गाली सुनाई नहीं पड़ी। खेल के मैदान में हम कुछ दोस्त मिलकर इसपर बात कर रहे थे कि हमें गाली सुनना और देना, दोनों बन्द करना होगा। यह मेरा पहला अनुभव था जब मैंने गाली देने पर रोक-टोक की। लोग समझते हैं, एक बार न समझें तो हमें बार-बार बोलना होगा। ऐसा करने से ख़ुद को भी अच्छा लगेगा और माहौल बदलने में हम अपनी हिस्सेदारी भी निभा पाएँगे।"

3. 12वीं कक्षा की एक लड़की ने शेयर किया, "मुझे गाली सुनना पहले भी अच्छा नहीं लगता था, पर हमारे घर में पापा बहुत गाली देकर बात करते हैं। एक दिन मेरे घर मेरी दीदी और जीजाजी आए थे। पापा ने मुझको गाली देकर कुछ काम करने को बोला। मैंने काम तो किया पर बहुत बुरा भी लगा। मैंने माँ से कहा, 'ये गाली देकर बात करते हैं, मेहमानों के सामने भी ध्यान नहीं रखते। हमको भी बुरा लगता है।' माँ ने कहा, 'कुछ नहीं होता।' तब मैंने माँ से कहा, 'उनको बोल देना कि गाली न दें।' मैंने 8 दिन तक पापा से बात नहीं की। उन्होंने सबसे पूछा, 'इसको क्या हुआ है, बात क्यों नहीं कर रही?' तब माँ ने मेरे सामने उनको उस दिन की बात बताई और कहा, 'आपके गाली देने के नाते नाराज़ है।' मैं सामने ही खड़ी थी। पापा ने मेरी तरफ़ देखा और बोले, 'अब नहीं दूँगा।' तब मैंने उनसे कहा, 'मुझको ही नहीं, आप किसी को गाली नहीं देना, न घर में, न बाहर। गाली सुनना किसी को अच्छा नहीं लगता चाहे वो कोई भी हो। कोई अगर आपको गाली देकर बात करे तो आपको कैसा लगेगा? इतनी गन्दी गालियाँ कैसे मुँह से निकल जाती हैं, आप थोड़ा भी नहीं सोचते!' " उसने बताया कि वह पहला दिन था, जब उसने अपने पापा को गाली देने से रोका और पापा ने 'सॉरी' बोलते हुए कहा कि ग़लती हो गई है, अब नहीं दूँगा।

4. समुदाय के एक युवा ने शेयर किया, "पहले जब किसी के मुँह से गाली सुनते थे तो

इतना बुरा नहीं लगता था। अब कोई भी गाली देता है तो कान खड़े हो जाते हैं और दिमाग़ में यह आने लगता है कि कुछ ग़लत बोला गया। अब ये शब्द सामान्य नहीं लगते।"

5. जब ये चर्चाएँ चल रही थीं, उसी समय की बात है। कॉलोनी के पार्क में रविवार को तीन युवा, जिनकी उम्र अन्दाज़न 20-25 होगी, कुछ सामान के साथ एक बेंच पर बैठे थे। वे शायद मोबाइल पर कुछ देख रहे थे, और बहुत तेज़-तेज़ बातें कर रहे थे। उनके हर वाक्य में गाली थी। मुझे बहुत अजीब लग रहा था। एक-दो बार नज़रअन्दाज़ किया। सोचा, शायद रुक जाएँ पर गाली देकर बात करना बन्द ही नहीं हो रहा था। थोड़ी हिम्मत करके मैं उनके पास गई और पूछा, "भैया, आप लोग कहीं बाहर से आए हैं?" एक ने 'हाँ' बोला, और बताया कि आज उनकी एक परीक्षा है। यहाँ बुकिंग 8 बजे से है तो यहीं रुक गए। मैं सोच रही थी कि इन्हें कैसे बोलूँ। फिर मैंने कहा, "आप लोगों की बातें गाली से शुरू हो रही हैं, सुनने में अच्छा नहीं लग रहा था। सोचा कि नहीं बोलूँ, पर मन नहीं माना इसलिए आप लोगों से बात करने आ गई।" वे तीनों मुझे बहुत आश्चर्य से देख रहे थे। मैंने फिर कहा, "आप लोगों को बता दूँ कि इस पार्क में गाली देना मना है, और पार्क में क्या, हम लोग हर जगह इसे लागू करने के लिए बातचीत कर रहे हैं। आप लोग भी इस बात का ख़्याल रखो, गाली देकर बात मत करो, न घर में और न ही किसी सार्वजनिक जगह पर।" तब उनमें से एक ने कहा, "सॉरी! अब नहीं देंगे।" मैंने बातचीत आगे बढ़ाते हुए कहा, "आप लोग ही बताओ, जिन गालियों का आप लोग उपयोग कर रहे थे, क्या घर में, अपने परिवार वालों के सामने, इनका उपयोग कर सकते हो?" उन्होंने जवाब देते हुए बताया, "घर पर ऐसे नहीं बोलते आंटी!" आगे हमारी बात हुई कि जो शब्द हम अपने घर वालों या माँ-बहन के सामने उपयोग करने में सहज नहीं हैं, उन शब्दों को बाहर सबके सामने कैसे उपयोग कर लेते हैं? सभी ने आगे से इस बात का ध्यान रखने और गाली देकर बात न करने की बात कही। इससे मुझे समझ में आया कि किसी को रोकने के लिए भी ख़ुद को बहुत तैयार करना होता है, ख़ुद भी चुनौती लेनी होती है।

बच्चों के लिए हिंसा मुक्त माहौल की कल्पना को साकार रूप देने के लिए अलग-अलग प्रयास जारी हैं। गालियों को हिंसा की शुरुआत मान सकते हैं। इस तरह गाली-गलौज की रोक के लिए दो स्तरों पर प्रयास किए जा सकते हैं : एक, स्वयं के स्तर पर और दूसरा, अपने आसपास के माहौल के स्तर पर। हमें यह भी देखना होगा कि हम जिस माहौल में रह रहे हैं, वहाँ बातचीत में किन शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है, किसके द्वारा किया जाता है और किस स्थिति में किया जाता है। ज़्यादातर लोगों ने यही कहा कि ये बहुत हद तक आदत की भी बात है। कई बार शब्दों के अर्थ नहीं मालूम, फिर भी हम गाली सूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं। व्यवहार में बदलाव की प्रक्रिया बहुत हद तक ख़ुद के साथ चलने वाली प्रकिया है, जिसमें व्यक्ति को अपने व्यवहार और तौर-तरीक़ों को सचेतता के साथ देखना होता है।

---

सीमा देशमुख 30 सालों से महिला अधिकार, पोषण, स्वास्थ्य एवं बाल सुरक्षा के मुद्दों के काम से जुड़ी हुई हैं। पिछले दो दशक से मुस्कान के शिक्षा और समुदाय कार्यक्रम के अन्तर्गत वे बाल संरक्षण और बाल अधिकारों पर केन्द्रित रूप से काम कर रही हैं।

सम्पर्क : seemadeshmukh24@gmail.com